सारी तालीमात

असग़र वजाहत

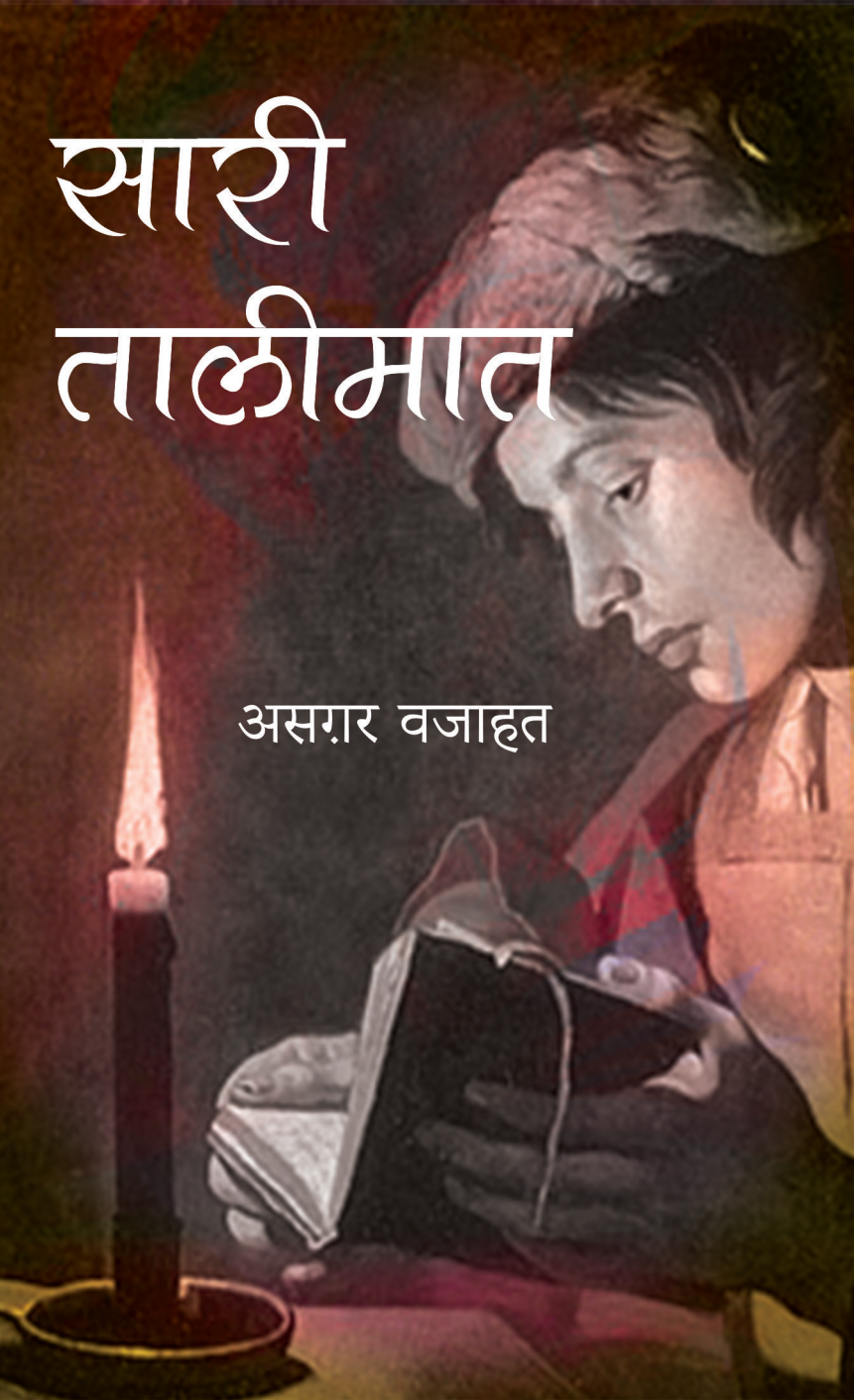

सारी तालीमात

हर तीन-चार साल के बाद शहर में फसाद हो जाता है, ढाटे बांधे हुए। 'हरहर महादेव' का नारा लगाते हिंदुओं के गिरोह मुसलमानों के मोहल्लों पर हमला करते हैं और मुसलमान, हिंदुओं पर जिहाद बोले देते हैं। आग लगाई जाती है। जो होली-ईद मिलन, एकता के सिद्धांतों और सांप्रदायिकता विरोधी कमेटियों की कागजी दीवार को भस्म कर देती है। दो-चार दिन तक गिरोह सक्रिय रहते हैं। तेजाब, चाकू, लाठियां, बल्लम और एक-आध बंदूक, देसी कट्टे लिये शत्रु की खोज में केवल एक-आध आदमी, औरत या दूकान ही नजर पड़ती है जिसका तत्काल फैसला कर दिया जाता है। कासिमपुरे में अफवाहों का बाजार गर्म हो जाता है। 'आज रात दो हजार हिंदू हमला करने वाले हैं।' मोहल्ले के लड़के अपनी-अपनी छतों पर ईटें जमा करने लगते हैं। 'आज पुलिस ने मास्टर रहमत अली का घर जला दिया' 'झूठ? क्या बकते हो? गफूर ने अपनी आंखों से देखा है।' 'यही तो गड़बड़ है मियां, पुलिस भी उनका साथ देती है, नहीं तो इन धोती बांधने वालों को तो एक घंटे में ठीक कर दें। लेकिन सरकार से कौन लड़ सकता है?' कासिमपुरा, नवाबगंज, रहमताबाद में मुसलमानों की सौ फीसदी आबादी है। लेकिन पूरे शहर में फिर भी हिंदू ज्यादा हैं। अगर हमला बोल दिया तो क्या होगा? मौत का डर मोहल्ले की रग-रग में चमक जाता है।

सड़कें ऊसर की तरह सुनसान हो जाती हैं। पुलिस के जूतों और सीटियों की आवाजों के सिवाय नहीं सुनाई देता, कभी-कभी पुलिस जीप की आवाज आती है और सन्नाटा छा जाता है,— 'बड़े पुल के पास मुसलमान की लाश मिली है।' 'आज पुलिस की गश्त नहीं हो रही है, जरूर हमला होगा।' पूरा मोहल्ला एक ठंडे भयानक तनाव और डर में डूब जाता है। चार-पांच दिन के बाद छुटपुट चाकू की वारदातें शुरू हो जाती हैं। पतली तंग गली के कोने पर तीन-चार आदमी मिलकर राशन की तलाश में निकले किसी झल्लीवाले या रिक्शेवाले को चाकू मार देते हैं। घुटी-घुटी-सी भयानक चीख, भागते हुए पैरों की आवाजें, खिड़कियां खुलने का शोर-शोर और फिर 'अल्लाह अकबर' के नारे सुनाई पड़ते हैं।

इस दंगे के बाद हिंदुओं के मोहल्ले के आस-पास रहने वाले मुसलमान किसी मुसलमानी मोहल्ले में आ जाते हैं और मुसलमानों की बस्ती के पास रहने वाले हिंदू रस्तोगीगंज या रघुबीरपुरा चले जाते हैं।

मुसलमानी मोहल्लों में दाढ़ियों की तादाद बढ़ जाती है। मस्जिद में नमाजी अधिक आने लगते हैं। लोग देर तक गिड़-गिड़ाकर दुआएं मांगने लगते हैं। गुंडा पार्टी लूट के माल को इधर-उधर करने में लग जाती है। हथियार जमा करने का चंदा वसूल करती है। पता नहीं अगले फसाद से सिर्फ गोलियां ही चलें। शहर में कितने हिंदुओं के पास बंदूकें हैं और कितने मुसलमानों के पास? दस और एक का भी तो औसत नहीं पड़ता, कारतूस जमा किए जाते हैं। लेकिन पुलिस का ख्याल आते ही सबकी हवा बिगड़ जाती है। जुग्गन, रहमत के होटल के सामने बहती नाली में बलगम थूककर कहता है, "यही तो गड़बड़ है जिगर। पुलिस अगर किसी तरफ से..."

"अब साले, हाजी जी से चंदा क्यों नहीं लेते? कारखाना चलाते हैं हराम में ?"